

1. मानसिक पराधीनता

लेखक परिचय:— प्रेमचन्द जी का जन्म वारणासी के निकट लमही गाँव में 31 जुलाई 1880 में हुआ था। उनकी शिक्षा उर्दू, फारसी में हुई और जीवनयापन का अध्यापन से पढ़ने का शौक उन्हें बचपन से ही लग गया। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। उन्होंने अंग्रेजी, दर्शन, फारसी और इतिहास में इंटर पास किया और 1919 में बी.ए. पास करने के बाद शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। बीसवीं शती के पूर्वार्द्ध में, जब हिन्दी में तकनीकी सुविधाओं का अभाव था, उनका योगदान अतुलनीय है। प्रेमचन्द के बाद जिन लोगों ने साहित्य को सामाजिक सरोकारों और प्रगतिशील मूल्यों के साथ आगे बढ़ाने का काम किया, उनमें यशपाल से लेकर मुक्तिबोध तक शामिल है। उनके पुत्र हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार अमृतराय हैं जिन्होंने इन्हें 'कलम का सिपाही' नाम दिया था।

प्रेमचन्द आधुनिक हिन्दी कहानी के पितामह और सम्राट माने जाते हैं। उनकी पहली हिन्दी कहानी सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित हुई। प्रेमचन्द ने करीब तीन सौ कहानियाँ, लगभग एक दर्जन उपन्यास और कई लेख लिखे। उन्होंने कुछ नाटक भी लिखे और कुछ अनुवाद कार्य भी किया। प्रेमचन्द के कई साहित्यिक कृतियों का अनूदित देशी, विदेशी भाषाओं में हुआ। 'गोदान' उनकी कालजयी रचना है। 'कफन' उनकी अंतिम कहानी मानी जाती है।